Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2020, VOL- 8/40

कथक नृत्य का उदभव और उसका आधुनिक विकास

ममता झा मसराम
रिजनल आउटरिच ब्यूरो, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
केंद्रीय सदन अकुर्डी, पुणे , महाराष्ट्र-411044, mamtamakrand@yahoo.in

Abstract

यह संदर्भित शीर्षक के पीछे मेरा मुख्य उद्देश्य यह है कि कथक नृत्य के उद्गम के बारे में हमने अपने गुरुओं से जो सुना है वह आम युवा पीढ़ी तक पहुंचे और वह भी इस सच्चाई से अवगत हो । हम यह कह सकते हैं कि कथक नृत्य ने प्राचीन काल से लेकर अबतक कई उतार-चढ़ाव देखे, कभी इस नृत्य विधा को ईश्वर की आराधना माना गया तो कभी कोठे और राज दरबार में भी पेश किया गया इतना होने के बावजूद भी उत्तर भारत में यह कथक नृत्य आज के युवा पीढ़ी की पहली पसंद है ।

यह जानकर काफी खुशी होती है कि आज का कथक नृत्य अपनी चरम स्थिति में है आज की कई युवा पीढ़ी इस विषय पर अनेकों शोध कार्य कर रहे हैं, कई पुस्तकों का लेखन हो रहा है दिन ब दिन नई नई नई-नई संस्थाएं गुरुओ द्वारा संचालित किया जा रहा है, जहां गुरु शिष्य परंपरागत तरीके से इस विधा का प्रचार प्रसार देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी हो रहा है । सांस्कृतिक मंत्रालय द्वारा अपने देश के युवा वर्ग को कथ्थक नृत्य सीखने हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है एवं अन्य देश के युवा वर्ग भी कथक नृत्य को सीखने के लिए भारत में आ रहे हैं । अतः यह कहना बिल्कुल सही होगा कि आज का कथक नृत्य आज के युवा पीढ़ी की पहली पसंद है और इसके साथ-साथ इसे संरक्षित प्रचारित और सर्वोच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए सभी गुरु वचनबद्ध है ।

Scholarly Research Journal's *is licensed Based on a work at* www.srjis.com

कथक नृत्य के पहले नृत्य के बारे में जानना जरूरी है। नृत्य हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। जब कभी मनुष्य अपने मनोभावों को हावभाव के द्वारा अथवा शारीरिक अंगो द्वारा प्रकट करता है तो वह शरीर द्वारा सहज प्रकट होने वाली हलचल कहलाती है। जब भी हम खुश होते है या होते थे या हुए होंगे ,जब भाषा का विकास भी नही हुआ था तब लोग अपने हावभाव तथा शारीरिक अंगो के जरिए ही अपने मनोगत को व्यक्त करते होंगे, नृत्य का सम्बन्ध खुशहाली और प्रसन्नता से रहा है। क्योंकि जब मनुष्य खुश होता है तब उस के मस्तिष्क में एक उमंग और शरीर में हलचल होती है, वह खुशी है ,उस खुशी को जाहिर करने के लिए ही उसके हाथ पैर थिरकने लगते है, और अपनी खुशी को व्यक्त करने हेतु शरीर की स्वच्छंद थिरकन ही नृत का सशक्त माध्यम है। वैसे नृत्य की उत्पत्ति मानव जीवन के साथ ही हुई है।1

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्राचीन काल में भी नृत्य पूर्णरूपेण लोगो के बीच विद्मान था, जिसका सशक्त उदाहरण भारत की आदिम जनजातियों (आदिवासी) में मिलता है। सदियों से इनके सभी सामाजिक तथा पारिवारिक अनुष्ठानों में नृत्य प्राय ही किया जाता रहा है, एक और उदाहरण के तौर पर उल्लेख किया जाए तो अजंता, एलोरा, एलिफंटा तथा भारत के कई प्राचीन मंदिर जैसे खजुराहो मध्य प्रदेश, कोणार्क सूर्य मंदिर, उड़ीसा यहा प्रत्यक्ष पाषाण मूर्तियो के रूप मे देखा जा सकता है ।2

वैदिक मतानुसार नृत्य की उत्पत्ति 'नृ' धातु से हुई है। इसका उल्लेख वैदिक साहित्य में इस प्रकार किया गया है1'

'बहिस्टोवा हवाना स्तोमो द्व्तों हुवन्नर1' नरा मनुष्या नृत्यन्ती कर्मसु'(ऋग्वेद)

अर्थात नर मनुष्य को कहते है,जब मनुष्य कार्य करते हुए अपने हाथ पैर को इधर-उधर डुलाते हैं तो वह नृतकी अवस्थाएँ होती है जो आगे चलकर अलग अलग-प्रदेशों में उनकी अपनी शैली, भाषा के साथ विकसित हुआ जो आगे चलकर कथावाचक के रूप में धीरे-धीरे पनपने लगा, जैसे जैसे भाषा का विकास हुआ लोग अपनी जीविका के लिए नए-नए संसाधनों को विकसित करने लगे जिसमें गायन, वादन और नृत्य चुकी यह मनुष्य के जन्म के साथ-साथ पनपा इसको अपनी रोजी-रोटी का साधन बनाने लगे।3

प्राचीन काल से ही कथाकारों द्वारा महापुराणों और पौराणिक कथाओ से कथा सुनाने की प्रथा सी थी। जो कथाकार थे उनकी वंशानुगत परंपरा थी । जो पीढ़ी दर पीढ़ी चल रही थी, इनमे ज़्यादा संख्या ब्राहमनों की थी कथा उपरांत कीर्तन भजन भी होता था,जिसमे भरत या नटलोग नृत्य किया करते थे । जिस प्रकार हर प्रदेश में उसकी परंपरा रीति-रिवाज के अनुसार आध्यात्मिक रूप में ईश्वर के कथानक भजन, कीर्तन कर लोगों को आध्यात्मिक रूप से प्रेरित किया जाने लगा वहाँ से कथा वाचक परंपरा का जन्म हुआ जो मंदिरों में पल्लवित हुआ, हमारे पूर्वज और विद्वान कलाकारों का भी यही कहना है कि कथक नृत्य की उत्पत्ति भी उसी कथा वाचकों से हुई है इसलिए कहा गया है ''कथा कहे सो कथक कहाये'' अर्थात कथावाचक को ही कत्थक कहां जाने लगा । कथक नृत्य का वर्णन महा पुराण और महाभारत में भी देखा जा सकता है जहां मध्यकाल में कृष्ण राधा के कथा को लोग बहुत ही आविर्भाव हो कर सुनते थे कथ्थक नृत्य को लोग पुर्ण इसलिए मानते है क्योकि इसमे नृत के साथ-साथ अभिनय पक्ष भी उतना ही सबल है । आज भी लोग नाट्य नृत्य को ज़्यादा पसंद करते है क्योकि इसमे नृत के साथ अभिनय भी देखने को मिलता है । जब सिनेमा का चलन उतना नहीं था तब गाव मे लोग रात–रात भर जागकर नाटक देखा करते थे जिसमे कृष्ण लीला, महाभारत, रामायण, राजा हरिश्चंद्र जेसे नाटको का मंचन हुआ करता था। दरअसल कथक की शुरुआत अगर हम गाव से माने तो कोई

आश्चर्य की बात नहीं है। धिरे- धिरे लोग अपनी उपजीविका हेतु गाँव से शहरो की ओर आए बस इस प्रकार कथक की यात्रा भी प्रारम्भ हुई जो गाव से निकलकर शहर तक पहुची।4

मंदिर काल के पश्चात मुग़ल काल का समय आया जिस समय इस नृत्य को लुभाने
हेतु प्रदर्शित किया जाने जाने लगा, भक्ति रस की जगह श्रृंगार रस ने ले लिया और भजन के बदले नए-नए ठुमरी और ग़ज़ल ने अपना स्थान ले लिया क्योंकि इस समय मुग़लो को खुश करने के लिए जो भी गुरु थे उनका सारा ध्यान नृत्य के भाव भंगिमाओ पर आ गया । हाथ में शराब का प्याला और घुंगरूओ की थाप मुगल दरबार की शोभा बढ़ाने के कारण, अच्छे घर परिवार के लोग दूर हो गए। भगवान की उपासना किए जाने वाला नृत्य अब मुग़लो को रिझाने मे लग गया। बड़े –बड़े नृत्यचारियों को उनकी शिक्षा-दीक्षा के लिए महल मे नौकरी दी गई । कथक नृत्य की वेशभूषा पर भी मुग़लकालीन दरबार का खास प्रभाव पड़ा था । मुग़लिया अंदाज़ का चूड़ीदार पैजमा जैकेट दुपट्टा जिसे पेशवाज़ भी काहा जाता था, इसका उपयोग होने लगा ।5

तीसरी व चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में रूप योवन और कला संपन्न गणिका को राजनर्तकी के रूप में उच्च्य वेतन पर नियुक्त किया जाता था और उन्हें गुप्तचरो के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता था । नाट्यचार्यों को गणिकों के कोठो पर निउक्त किया गया, ताकि वो भी नृत्य मे पारंगत हो जाये । बड़े-बड़े गुणिजन इधर-उधर चले गए । शास्त्र और धर्म पूरी तरह विलुप्त हो गए, नृत्य और संगीत दोनों का रूप बिल्कुल कामवासना से ओतप्रोत हो गया ,अब जो भी शास्त्र बचा था वो केवल उस्तादों के पास ही था । चुकी उस समय लोग इतने किताबी भाषा मे पढे-लिखे नहीं होते थे इसिलिए बहुत सारी चीजे उनके साथ ही चली गई, जितना उनकी आगे की पीढ़ी याद रख सकती थी उतना ही याद रहा । दरअसल किसी ने भी इसे किताब के रूप मे प्रकाशित करने की ज़रूरत नहीं समझी । भारतिय नृत्य के सभी परिभाषीक लफ़्ज उर्दू भाषा मे परिवर्तित हो गए ताकि मुस्लिम शिष्य-शिष्याओ को बोलने मे कठिनाई नहीं हो ।

गुप्त काल दूसरी से पांचवी शताब्दी ईसा पूर्व साहित्य और कला के योग का उन्नत काल कहा जाएगा, कई सामाजिक पर्व के अवसर पर संगीत कार्यक्रम और नृत्य प्रस्तुति आम बात थी, मंदिरों में संगीत नृत्य की उपासना हेतु कई संगीत विद्वानों को नियुक्त किया गया था । डॉ यू .एन. घोषाल ने लिखा है कि गुजरात राज्य में 4000 मंदिर जिसमें लगभग लगभग 20,000 से भी ज्यादा नृत्यांगना स्थाई रूप में रह रही थी, इनका काम सुबह और शाम ईश्वर की पुष्प पूजा, अर्चना के वक्त और भोग लगाने के समय उन

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मंदिरों के विशाल प्रांगण में नृत्य प्रस्तुत करना था । 1925 में जब सोमनाथ मंदिर पर महमूद गज़नवी ने आक्रमण किया
था तो उस समय भी मंदिरों में हजारों की तादात मे नृत्यांगनाए वहाँ उपस्थित थी16

मध्य काल के समय धार्मिक वृत्ति में विलासिता ने अपने पाँव जमा लिए, लोग दर्शन और आध्यात्म से श्रृंगार रस के पिंजरे मे कैद हो गए, किंतु नृत्य की परंपरा वहाँ भी जीवित रही इतना सब कुछ होने के पश्चात भी कथक नृत्य से धार्मिकता का संबंध कभी भी नहीं टूटा । उसी वक्त मुग़लो द्वारा मुग़ल राज्य स्थापित हुआ । भारतीय विद्या कला परंपरा को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया गया । ईश्वर उपासना की जगह मनोरंजन के लिए प्रयोग किए जाने वाली शराब का प्याला लेकर नर्तकों को नाचने के लिए मजबूर किया जाता था, इसी कारणवश सभी उस्तादों का ध्यान कथ्थक के मुख्य शास्त्र से हटकर पैरों के गति पर आ गया जो उस समय 'गत चाल' के नाम जाना गया । विभिन्न प्रकार की मुद्राओं के साथ चलन करने को गत भाव कहा जाता है, जैसे छपके की चाल, घुंघट की चाल, रुख़सार गत आदि कई तरह के भाव का प्रादुर्भाव हुआ । ईश्वर उपासना की जाने वाली स्तुति ने सलामी का रूप ले लिया । किन्तु इसी संबंध में इसके अतिरिक्त एक तीसरी परंपरा ने भी जन्म लिया जो मुसलमान राजाओ के सैनिको और हिन्दू समाज के विलासी पुरुषो के मन को बहलाने के लिए एक अलग वर्ग का निर्माण हुआ जो वेश्याए या तवायफ़े कहलाने लगी ।7

किन्तू 16 वी शताब्दी मे जब अकबर का शासन काल आया तब कही जाकर कथक नृत्य को नवीन जीवन मिला । उसी काल मे वृन्दावन मे स्वामी हरिदास जी, जो की एक महान गायक थे, तथा उनके शिष्य भी गायक एवं नर्तक थे । जो नर्तक शिष्य थे वो उनकी रचनाओ को गाते हुए भक्ति पूर्वक नृत्य करते हुए मंडलिओ के रूप मे पूरे देश भर मे भ्रमण किया करते थे । इस भक्ति परंपरा मे मीराबाई, सूरदास, विद्यापति और ठाकुर जयदेव आदि संतो का उल्लेख आवशयक है । इन संतो ने भगवान कृष्ण की प्रशंसा मे अनेकों भजनो की रचना की जो की समाज मे भक्तो के द्वारा गाए बजाए जाते थे । आधुनिक युग मे भी सभी शास्त्रिए नृत्यो मे कृष्ण भजन व राम भजन को लोग सबसे ज़्यादा पसंद करते है,कोई भी संगीत कार्यक्रम इन दोनो भजनो के बिना पूर्ण नहीं हों सकता । इस प्रकार भारतीय दर्शन मे भी संगीत केवल मन बहलाने का साधन नहीं अपितु साधना का मार्ग भी माना गया है18 कई विद्वानो ने तो संगीत और नृत्य
का जन्म 'ॐ' से माना है । 'ॐ' शब्द तीन अक्षरो के मिलने से बना है । इन तीन अक्षरो के ध्वनियो को ब्रम्हा यानि की जो उत्पन्न करने वाला, विष्णु यानि पालन करनेवाला और महेश यानि संहार करनेवाला माना गया है । यही ध्वनियाँ सभी शक्तियों की पुंज है ।9

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

17 वीं शताब्दी के कई चित्र से प्रमाणित होता है जिसमें नटो के तमाशे और कत्थक दोनों का समन्वय दिखाया गया है । वाजिद अली शाह के काल में उसी तमाशा को मंडलियों के रूप में बाटकर दरबार में प्रश्रय दिया गया था । इस प्रकार भक्ति प्रधान गीतों को भी शृंगारिक भरे लहज़े में पेश किया जाने लगा जैसे राधा कृष्ण का संयोग-भाव को कामवासना की तरह प्रस्तुत किया जाने लगा । इस तरह से एक नृत्य कला मे दो परंपराओं ने जन्म लिया, एक मंदिर परंपरा और दूसरी दरबारी परंपरा उसी के अंतिम नवाब वाज़िदअलीशाह अपने अय्याशी के लिए संसार भर में प्रसिद्ध हो चुके थे, लेकिन इनके काल में संगीत और नृत्य कला को नवीन जीवन भी मिला । इन्होने एक रहसखाना तैयार किया था जिसमें कई महिलाए एक साथ भाग लेती थी यह सभी स्त्रियाँ वाज़िदअलीशाह की बेग़मे हुआ करती थी, अधिक स्त्रियोंउक्त विलासिता पूर्ण नृत्य उन्हें बहुत पसंद था ।10

इस तरह कई उतार-चढ़ाव के बावजूद भी कथक नृत्य ने अपनी अस्मिता को बचाए रखा । कहा जाता है कि उसके बाद से ही कथक नृत्य में बहुत परिवर्तन आ गया और वह परिवर्तित समय था, जब ईश्वरी प्रसाद द्वारा' नटवरी नृत्य' का पुनरुत्थान हुआ । कई वर्षों तक अपनी अथक परिश्रम और शोध से उन्होंने 80 वर्ष की आयु में यह कार्य पूरा किया और, तत्पश्चात 100 वर्ष की आयु तक उन्होंने "नटवरीनृत्य" की शिक्षा अपने सुपुत्रो को दी और इस प्रकार से कई घरानो का भी जन्म हुआ जो आगे चलकर जयपुर घराना, लखनऊ घराना और बनारस घराने के नाम से प्रसिद्ध हुआ । आगे चलकर ये तीनों ही घराने अपनी-अपनी विविधता को लेकर पूरी दुनिया मे प्रसिद्ध हो गए । जयपुर घराने की नीव भानु जी ने रखी और लखनऊ घराना ईश्वरी प्रसाद जी के हाथो पल्लवित, पुष्पित हुआ । यहां से एक नई परंपरा का जन्म हुआ, जो अभी तक हमारे महान कलाकार बिरजू महाराज और उनके सुपुत्र भी इस कला को आगे बढ़ाने मे लगे हैं । महाराज जी का पूरा घराना इसी साधना में जुटा रहता है ।11

इसी दृष्टिकोण, विचार, परंपरा को लेकर आज आधुनिक भारत जो आज डिजिटल इंडिया के नाम से जाना जाता है अपनी कई तरह के बहुदेषीय सोच को एक नया सवेरा दे रहा

है । आज के वर्तमान समय में जहां लोग कोरोना वायरस के कारण घरों से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं, वही हमारे कलाकार इन्हीं कला के माध्यम से चाहे वह वेबीनार के माध्यम से हो या ऑनलाइन जागरूकता अभियान के तहत, लोगों तक अपनी बातों को पहुंचा कर देश की सेवा और सरकार के दिए गए निर्देशों को भी जन जन तक पहुंचा रहे हैं । आज हम जैसे कलाकार प्रत्येक दिन कुछ ना कुछ सोशल मीडिया जैसे फेसबुक,

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, के माध्यम से जागरूकता फैला रहे हैं और कई तरह के सेमिनार ऑनलाइन आयोजित कर लोगों का मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षित और संस्कृति सहभागिता-का भी आदान-प्रदान कर रहे हैं ।

आज जो कलाकारो वित्तीय परेशानी के कारण बाहर जाकर बड़े-बड़े उस्तादों से नहीं सीख पा रहे थे वें आज घर बैठे ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से कई तरह की विधा को सीख पा रहे हैं । आज कई तरह की जानकारी हमें चाहे ऑडियो के रूप में या फिर वीडियो के रूप में सोशल मीडिया के तहत प्राप्त हो रहे हैं, इससे एक 'डिजिटल क्रांति' के युग का आगाज़ कहेंगे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

अतः इस प्रकार इतने सारे उतार-चढ़ाव के बावजूद आज की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति कला विरासत परंपरा के प्रति वचनबद्ध है और कई तरह के माध्यम से देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी आज कथक नृत्य काफी प्रचलित है, जो कलाकार विदेशों में है वो भी बहुत बड़े पैमाने पर इस कला के प्रचार प्रसार के कार्य को कर रहे हैं और उसे लोगों तक पहुँचा रहे हैं 12 ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्रम संख्या

पुस्तकों के नाम

01 कथ्थक नृत्य परंपरा पृ. सं- 1
02 1) सुझाव , मदद-गुरु शमा भाटे, पुणे
2) गुरु .लावण्या किर्ति सिह (काव्या), ललित नारायण मिथिला विश्वविध्यालय ,दरभंगा
03 कथ्थक नृत्य परंपरा पृ. सं- 2
04 1) सुझाव मदद- गुरु शमा भाटे,
2) गुरु .लावण्या किर्ति सिह (काव्या), ललित नारायण मिथिला विश्वविध्यालय ,दरभंगा
3) कथ्थक नृत्य पृ सं- 26
05 कथ्थक नृत्य पृ. सं- 27
06 कथ्थक नृत्य परंपरा पृ. सं- 8
07 1) कथ्थक नृत्य पृ. सं- 27
2) कथ्थक नृत्य परंपरा पृ. सं- 3
08 कथ्थक नृत्य परंपरा पृ. सं-3
09 संगीतायन पृ. सं-2
10 कथ्थक नृत्य पृ. सं- 28
11 1) कथ्थक नृत्य पृ. सं- 29
2) सुझाव , मदद मदद –गुरु शमा भाटे ,पुणे
3) गुरु .लावण्या किर्ति सिह (काव्या), ललित नारायण मिथिला विश्वविध्यालय ,दरभंगा
12 1) सुझाव , मदद –गुरु शमा भाटे ,पुणे
2) गुरु .लावण्या किर्ति सिह (काव्या), ललित नारायण मिथिला विश्वविध्यालय ,दरभंगा,
3) स्वयं अनुभव

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language